सखि मोर पिआ।
अबहु न आएल कुलिस-हिआ।।
नखर खेंओलहुँ दिन लिखि-लिखि। नयन अँधाओलहुँ पिआ पथ देखि
जब हम बाला परिहरि गेला।
किए दोस गुन बुझिओ न भेला।।
अब हम तरुनि बुझब रस-भास।
हेन जन नहि जे कहत पिआपास।।
आब एहेन करि पिआ मोर गेला।
पुरबक जत गुन बिसरित भेला।।
भनइ विद्यापति सुन अब राइ।
कानु समुझाबइते अब चलि जाइ।।

– हे सखि, मेरे प्रियतम अभी भी नहीं आए, वे वज्र-हृदय हैं।
दिन की गणना (लिख-लिखकर) करते हुए मैंने नख घिस लिए। प्रियतम के रास्ते को देखते-देखते मैं ने आँखे अंधी बना ली।
जब हम बाला थी उसी समय वे मुझे छोड़कर गए थे। (उनके संग में) क्या दोष है, क्या गुण है, यह मैं समझ भी नहीं पाई थी।
अब मैं तरुणी हो गयी हूँ। अब रस की बातें समझूँगी। ऐसे कोई नहीं है जो प्रियतम के पास की - प्रियतम की कुशल-वार्ता - मुझसे कहे।
अब मेरे स्वामी ऐसा करके चले गए हैं। पूर्व के जो भी गुण थे सबों को भूल गए हैं।
विद्यापति कहते हैं कि हे राधा, सुनो, अब कृष्ण को समझाने के लिए (स्वयं) चली जाओ।

Scanned with CamScanner